

Inhalt

| | |
|---|----|
| Einleitung | 1 |
| I Das Bild vom „Weinberg“ und von der „Weinrebe“ (Jes 5,1-7; Jer 2,21; 6,9; 8,13; Jes 3,14; Jer 12,10) | 11 |
| 1 Jes 5,1-7 und Jer 2,21 | 11 |
| 1.1 Jes 5,1-7 | 11 |
| 1.2 Jer 2,21 | 19 |
| 1.3 Vergleich von Jes 5,1-7 mit Jer 2,21 | 21 |
| 2 Jes 5,1-7 und Jer 6,9 | 29 |
| 3 Jes 5,1-7 und Jer 8,13 | 32 |
| 4 Jes 3,14 und Jer 12,10 | 36 |
| 4.1 Jes 3,14 | 36 |
| 4.2 Vergleich von Jes 3,14 mit Jer 12,10 | 36 |
| II Die Widernatürlichkeit des Abfalls (Jes 1,2f; Jer 2,12f; 8,7) | 42 |
| 1 Jes 1,2f und Jer 2,12f | 42 |
| 1.1 Jes 1,2f | 42 |
| 1.2 Jer 2,12f | 48 |
| 1.3 Vergleich von Jes 1,2f mit Jer 2,12f | 49 |
| 2 Jes 1,3 und Jer 8,7 | 57 |
| III Das verstockte Volk (Jes 6,9f; Jer 5,21; 5,28) | 61 |
| 1 Jes 6,9f und Jer 5,21 | 61 |
| 1.1 Jes 6,9f | 61 |
| 1.2 Jer 5,21 | 74 |
| 1.3 Vergleich von Jes 6,9f mit Jer 5,21 .. | 75 |
| 2 Jes 6,9f und Jer 5,28 | 83 |
| 2.1 Jer 5,28 | 83 |
| 2.2 Vergleich von Jes 6,9f mit Jer 5,28 .. | 85 |

| | | |
|-----------|---|-----|
| IV | Sozialkritik | |
| | (Jes 1,23; Jer 5,28; Jes 1,16f; Jer 13,23; 4,22; 2,33; Jes 3,14; Jer 5,27) | 89 |
| 1 | Jes 1,23 und Jer 5,28 | 89 |
| 1.1 | Jes 1,23 | 89 |
| 1.2 | Vergleich von Jes 1,23 mit Jer 5,28 | 92 |
| 2 | Jes 1,16f und Jer 13,23 | 98 |
| 2.1 | Jes 1,16f | 98 |
| 2.2 | Jer 13,23 | 105 |
| 2.3 | Vergleich von Jes 1,16f mit Jer 13,23 | 106 |
| 3 | Jes 1,16f und Jer 4,22 | 111 |
| 3.1 | Jer 4,22 | 111 |
| 3.2 | Vergleich von Jes 1,16f mit Jer 4,22 | 112 |
| 4 | Jes 1,16f und Jer 2,33 | 117 |
| 4.1 | Jer 2,33 | 117 |
| 4.2 | Vergleich von Jes 1,16f mit Jer 2,33 | 118 |
| 5 | Jes 3,14 und Jer 5,27 | 124 |
| V | Der Zorn Jahwes | |
| | (Jes 9,11b [vgl. 5,25b; 9,16b.20b]; Jer 2,35; 4,8) | 132 |
| 1 | Jes 9,11b und Jer 2,35 | 132 |
| 1.1 | Jes 9,11b | 132 |
| 1.2 | Vergleich von Jes 9,11b mit Jer 2,35 | 136 |
| 2 | Jes 9,11b und Jer 4,8 | 141 |
| 2.1 | Jer 4,8 | 141 |
| 2.2 | Vergleich von Jes 9,11b mit Jer 4,8 | 143 |
| VI | Das Volk kehrt nicht um | |
| | (Jes 9,12; Jer 5,3; Jes 1,5) | 150 |
| 1 | Jes 9,12 und Jer 5,3 | 150 |
| 1.1 | Jes 9,12 | 150 |
| 1.2 | Jer 5,3 | 152 |
| 1.3 | Vergleich von Jes 9,12 mit Jer 5,3 | 153 |
| 2 | Jes 1,5 und Jer 5,3 | 160 |
| 2.1 | Jes 1,5 | 160 |

| | |
|--|-----|
| 2.2 Vergleich von Jes 1,5 mit Jer 5,3 | 162 |
| VII Ein „Ruheplatz“ für das Volk | |
| (Jes 28,11f; Jer 6,16) | 167 |
| 1 Jes 28,11f | 167 |
| 2 Jer 6,16 | 169 |
| 3 Vergleich von Jes 28,11f mit Jer 6,16 | 171 |
| VIII Kultkritik | |
| (Jes 1,11; Jer 6,20; Jes 29,1; Jer 7,21b) | 179 |
| 1 Jes 1,11 und Jer 6,20 | 179 |
| 2 Jes 29,1 und Jer 7,21b | 186 |
| 2.1 Jes 29,1 | 186 |
| 2.2 Jer 7,21b | 187 |
| 2.3 Vergleich von Jes 29,1 mit Jer 7,21b | 188 |
| IX Das Bild von der „Läuterung“ | |
| (Jes 1,21-26; Jer 6,27-30) | 192 |
| 1 Jes 1,21-26 und Jer 6,27-30 | 192 |
| 2 Vergleich von Jes 1,21-26 mit Jer 6,27-30 | 195 |
| X Vor Jahwe bleibt nichts verborgen | |
| (Jes 29,15; Jer 23,24) | 203 |
| 1 Jes 29,15 | 203 |
| 2 Jer 23,24 | 205 |
| 3 Vergleich von Jes 29,15 mit Jer 23,24 | 207 |
| XI Zusammenfassende Aufstellung weiterer Parallelen | 214 |
| Ertrag | 217 |
| Übersicht über die analysierten Entsprechungen | 227 |
| Literaturverzeichnis | 234 |
| Stellenregister | 256 |